THE STUDY
An Institute for IAS

आधुनिक भारत का इतिहास

मणिकांत सिंह

ब्रिटिश उपनिवेशवाद का द्वितीय चरण

औद्योगिक चरण (1813-1858)

उद्देश्य-भारत को विर्निमित उत्पादों के आयातक तथा कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित करना।

राजनीतिक नीति
साम्राज्यवादी प्रसार पर बल ताकि अधिक से अधिक भारतीय राज्यों को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लिया जा सके।

प्रशासनिक नीति
प्रशासनिक ढांचे में व्यापक सुधार एवं परिवर्तन को प्रोत्साहन देना।

आर्थिक नीति
कृषि का व्यावसायीकरण, भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों को धक्का पहुंचाना, रेलवे, टेलिग्राफ, डाक विभाग, सड़क मार्ग आदि का निर्माण।

सामाजिक नीति
समाज सुधार के लिए विधि -निर्माण करना तथा अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से नये सामाजिक वर्गों को जन्म देना।

सांस्कृतिक नीति
उदारवादी तथा उपयोगितावादी विचारधारा की प्रगति तथा भारत पर उसका प्रभाव

औद्योगिक पूँजीवाद (1813-1858) :-

उपनिवेशवाद के दूसरे चरण में औद्योगिक पूँजीवाद का विकास हुआ। इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप उद्योगपति और पूँजीपति वर्ग का विकास हुआ।

धीरे-धीरे **इंग्लैण्ड की सरकार पर भी इनका बर्चस्व स्थापित** हो गया। इस वर्ग ने अब ब्रिटेन की सरकार पर दबाव डालना शुरू किया कि भारत से ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया जाए। इसकी वजह थी कि औद्यौगिक क्रांति के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में बहुत बड़े पैमाने पर औद्यौगिक उत्पादन शुरू हो चुका था। अब इस उत्पादन के लिए भारत एक सशक्त बाजार साबित हो सकता था। औद्योगिक वर्ग के दबाव पर **1813 ई. में ब्रिटिश सरकार** ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया। इसी के साथ ब्रिटिश उत्पादन के लिए भारतीय बाजार पूर्णरूपेण खुल गया। यह भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के लिए एक धक्का था क्योंकि उन्होंने अपने देश का बाजार भी खो दिया। इतना ही नहीं भारतीय वस्तुओं पर आंतरिक चुँगी भी लगाई गई। इससे भारतीय वस्तुओं के आंतरिक व्यापार को भी झटका लगा। इतना ही नहीं जहाँ भारत के लिए ब्रिटिश सरकार ने मुक्त व्यापार की नीति अपना ली थी। वहीं ब्रिटेन में भारतीय वस्तुओं के निर्यात को हतोत्साहित किया गया। भारतीय वस्तुओं पर बड़ी मात्रा में चुँगी लगा दी गई। भारतीय सूती वस्त्र पर 30 प्रतिशत से 70 प्रतिशत तक चुँगी लगाई गई। भारतीय चीनी पर उसकी कीमत से तिगुनी चुँगी लगाई गई। **1824 ई. में कुछ वस्तुओं पर 400 प्रतिशत चुँगी लगा** दी गई।

ब्रिटिश कंपनी को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता कि शेष विश्व से भारत के व्यापार में व्यापार संतुलन कृत्रिम रूप से भारत के पक्ष में होना चाहिए ताकि ब्रिटिश सेवा की कीमत भारत चुका सके। दूसरी तरफ इंग्लैण्ड को उद्योगों के लिए कच्चे माल एवं श्रमिकों के लिए अनाजों की आवश्यकता थी। अतः भारत से कच्चे माल एवं अनाजों के निर्यात को प्रोत्साहित किया गया। भारत जो पहले तैयार माल का निर्यातक था अब वह उसका आयातक हो गया बदले में भारत कच्चे सूत, जूट, रेशम तथा नील, तेलहन, चमड़े एवं गेहूँ का निर्यात करने लगा।

THE STUDY

औद्योगिक पूँजीवाद के विकास के साथ इंग्लैण्ड में उपयोगितावादी विचारधारा भी विकसित हुई। इस विचारधारा ने प्रशासनिक दक्षता पर बल दिया ताकि वस्तुओं की बिक्री निर्बाध रूप से हो सके। वस्तुओं को सुदूर क्षेत्र में पहुँचाने के लिए उत्तम संचार व्यवस्था पर बल दिया गया। उपयोगितावादी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में भू राजस्व व्यवस्था और न्याय व्यवस्था आदि में संशोधन किया जाना था। स्थायी तथा रैयतवाड़ी बंदोबस्त व्यवस्थाओं के माध्यम से भारत में कृषि संबंधी ढ़ाँचे को पूंजीवादी दिशा में परिवर्तित करने की कोशिश की गई। बड़ी मात्रा में आयात व उनके आंतरिक विक्रय के लिए तथा और अधिक मात्रा में कच्चे माल का निर्यात करने एवं देश में लम्बी दूरी के बंदरगाहों पर उनके संग्रह के लिए परिवहन और संचार के लिए एक सस्ती व आसान व्यवस्था की आवश्यकता थी। ऐसी व्यवस्था के बिना भारत बड़ी मात्रा में विदेशी व्यापार के लिए नहीं खोला जा सकता था। इसलिए सरकार ने नदियों व नहरों का विकास किया, नदियों में वाष्प-चालित जहाज चलाने के लिए उत्साहित किया और सड़के बढ़ायीं। इन सबसे अधिक 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इसने भारत के बड़े शहरों व बाजारों को बंदरगाहों से जोड़ने वाली रेलवे लाईन बिछाने के लिए प्रोत्साहित किया और आर्थिक सहायता दी। इसी प्रकार आर्थिक लेन-देन को आसान बनाने के लिए आधुनिक डाक व टेलिग्राफ व्यवस्था को अधिक विकसित किया गया।

प्रशासनिक क्षेत्र में अब बहुत परिवर्तन लाए गए। प्रशासन का विस्तार इस तरह किया गया ताकि ब्रिटिश वस्तुओं को सुदूर तक पहुँचाया जा सके। परन्तु प्रशासन के उसी अंश को स्पर्शित किया गया जिससे ब्रिटिश शासन को प्रत्यक्षत: लाभ था। दूसरी तरफ, अपराधी कानून, अनुबंध कानून व कानूनी प्रक्रियाएँ, पर्सनल लॉ जिसमें विवाह और उत्तराधिकार से संबंधित कानूनों से संबंधित परिवर्तन अधिकांश रूप में अछूते ही छोड़ दिए गए क्योंकि अर्थव्यवस्था में औपनिवेशिक परिवर्तन को यह किसी भी रूप में प्रभावित नहीं कर रहे थे। दूसरी तरफ ब्रिटिश शासन का औचित्य को ढूँढने की कोशिश की जा रही थी। इसी के परिप्रेक्ष्य में इस बात को प्रचारित किया जाने लगा कि ब्रिटिश भारतीयों को स्वशासन के अनुकूल बना रहे हैं। इसी ने आगे चलकर भारतीय राष्ट्रवादियों की आकांक्षाओं को जगा दिया।

वस्तुत: इस समय ब्रिटेन ही एकमात्र तीव्र गति से औद्योगीकृत देश था। परिणामस्वरूप ब्रिटेन में बहुतों को यह विश्वास था कि भारत के साथ इस रूप में व्यापार बनाए रखा जा सकता था, चाहे ब्रिटेन भारत पर अपना प्रत्यक्ष राजनीतिक व प्रशासकीय नियंत्रण हटा ले, जब तक वहाँ कानून व व्यवस्था, मुक्त व्यापार तथा व्यापार अनुबंध सुरक्षित बने हुए हैं। यहाँ तक कि उदार साम्राज्यवादियों ने भी विश्वास किया कि इन गुणों को प्राप्त करने में भारतीयों को सौ या अधिक वर्ष लगेंगे और इसलिए आने वाली शताब्दियों के लिए ब्रिटिश शासन बनाए रखा जाना चाहिए और उसे मजबूत बनाया जाना चाहिए।

प्रश्न : 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रसार की नीति औद्योगिक पूँजीवाद के हित से प्रेरित थी। विश्लेषण कीजिए।

उत्तर : जहाँ 18वीं सदी में ब्रिटिश कंपनी की नीति का बल यथासंभव भारतीय राज्यों के अधिग्रहण से बचना रहा था वहीं 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में ब्रिटिश नीति का बल हर संभव भारतीय राज्यों के अधिग्रहण करने पर रहा था। इस तथ्य की व्याख्या बदले हुए औपनिवेशिक हित के संदर्भ में किया जाना चाहिए। 1813 के चार्टर के आधार पर भारत को ब्रिटिश औद्योगिक पूँजीवाद के शोषण के लिए खोल दिया गया। अत: इस काल में ब्रिटिश नीति का बल रहा था भारत को तैयार माल के आयातक एवं कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित करना। इसके लिए अधिक से अधिक भारतीय राज्यों को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लिया जाना आवश्यक था।

यही वजह है कि लार्ड हेस्टिंग्स, ऑकलैड, ऐलेनबोरो, हार्डिंग सभी ने विस्तारवादी नीति पर बल दिया। अन्त में डलहौजी ने तो अनियंत्रित विस्तार पर बल दिया। लार्ड हेस्टिंग्स ने आंग्ल-नेपाल युद्ध के पश्चात् सुगौली की सन्धि के माध्यम से नेपाल से एक बड़ा भूभाग प्राप्त किया। फिर तृतीय आंग्ल-**मराठा युद्ध के पश्चात् उसने पेशवा के क्षेत्र का अधिग्रहण** कर लिया। ऑकलैंड का अफगान अभियान इस विस्तारवादी नीति की ही परिणाम था। आगे एलेनबोरो ने सिंध को जीतकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। लार्ड हार्डिंग ने प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध के माध्यम से पंजाब में विस्तार करने का प्रयास किया। फिर डलहौजी ने इस विस्तारवादी नीति को आगे बढाने के लिए युद्ध एवं विचारधारा दोनों का सहारा लिया। युद्ध के माध्यम से उसने **पंजाब, सिक्किम, लोअर बर्मा आदि क्षेत्र का अधिग्रहण** किया वहीं व्यपगत के सिद्धान्त की घोषणा कर उसने सात राज्यों को मिलाया। अन्त में उसने कुशासन की अवधारणा पर बल देकर अवध का भी अधिग्रहण कर लिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रिटिश औद्योगीकरण की जरूरत ने भारत में विस्तारवादी नीति को प्रोत्साहन दिया।

THE STUDY

प्रश्न :- ब्रिटिश औद्योगिक पूंजीवाद ने भारत को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना पर किस प्रकार का प्रभाव डाला। स्पष्ट करें।

उत्तर: भारत संबंधी ब्रिटिश नीति सदा ब्रिटिश औपनिवेशिक हित से परिचालित होती रही। औद्योगिक पूंजीवाद के काल में ब्रिटिश नीति का बल भारत को कच्चे माल के आयातक एवं कच्चे माल के निर्यातक के रूप में तब्दील करने पर रहा था। ब्रिटिश की उपर्युक्त नीति ने भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला।

अगर भारत को ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार के रूप में विकसित किया जाना था तो आवश्यक था कि अधिक-से-अधिक भारतीय राज्य को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लिया जाए। अत: इस काल में कंपनी ने साम्राज्यवादी प्रसार पर बल दिया तथा 1813 (लार्ड हेस्टिंग्स) एवं 1856 (लार्ड डलहौजी) के बीच भारत में जो भी गवर्नर जनरल आए, उन्होंने अनियंत्रित विस्तार पर बल दिया।

फिर, औद्योगिक पूंजीवाद ने भारतीय अर्थव्यवस्था की पूरी संरचना को परिवर्तित कर दिया। ब्रिटिश औद्योगिकरण की जरूरत ने भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को निचोड़ दिया। भारत में व्यावसायिक खेती को प्रोत्साहन देने का उद्देश्य था ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल सुनिश्चित करना। इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश मुक्त व्यापार की नीति ने भारतीय उद्योगों को धक्का पहुंचाया।

ब्रिटिश औद्योगिक पूंजीवाद के कुप्रभाव से भारत का सामाजिक क्षेत्र भी अछूत नहीं रहा। भारत में कंपनी की सरकार ने समाज सुधार के लिए विधि निर्माण पर बल दिया ताकि भारत परंपरागत ढांचे से निकलकर अंग्रेजी शिक्षा को स्वीकार कर सके। तत्पश्चात् अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त युवाओं का एक वर्ग पैदा हो सका तथा इस वर्ग ने ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार का काम किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रिटिश औद्योगिकरण ने भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना को अपने ढंग से प्रभावित किया।

THE STUDY

गाँधी

1. गाँधी के उद्भव की परिस्थितियाँ :-

(i) गाँधी के आगमन के समय एक राजनीतिक शून्य की स्थिति उत्पन्न हो चुकी थी। कांग्रेस का उदारवादी कार्यक्रम जनता के बीच अपना विश्वास खो चुका था, उग्रवादी एक जनआन्दोलन लाने में विफल रहे थे।

(ii) दक्षिण अफ्रिका में ही गाँधी जी ने अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। सबसे बढ़कर दक्षिण अफ्रीका की राजनीति उनके लिए एक बड़ा प्रयोगशाला सिद्ध हुई, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में ही उन्होंने अंहिसा और सत्याग्रह की तकनीक, स्वयं सेवकों का गठन, रचनात्मक कार्यक्रम सभी तकनीक विकसित कर लिया था।

(iii) प्रथम विश्व युद्ध ने भारत में विभिन्न सामाजिक वर्गो को प्रभावित किया। पूँजीपति वर्ग प्रथम विश्व युद्ध के मध्य औद्योगिक वस्तुओं पर करारोपण तथा युद्ध के पश्चात् की अनिश्चितता से विक्षुब्ध थे, जबकि श्रमिक वर्ग उद्योगों में छँटनी के खतरे को झेल रहे थे। उसी प्रकार धनी किसान कृषि वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट से परेशान थे जबकि निम्न वर्गीय किसान भूखमरी और अकाल की समस्या से ग्रस्त थे। इसके अतिरिक्त प्रथम विश्व युद्ध के मध्य पहली बार भारत की युवा पीढ़ी ने पाश्चात्य संस्कृति के कुरूप चेहरे को देखा अर्थात् स्वतंत्रता एवं प्रजातंत्र को जन्म देने का दावा करने वाले देश किस प्रकार मानव के विरूद्ध रासायनिक और जैविक युद्धास्त्रों का प्रयोग कर रह थे। यह भी एक वजह है कि गाँधीवादी राष्ट्रवाद को विभिन्न वर्गो का समर्थ प्राप्त हुआ।

(iv) गाँधी के आगमन के समय अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी आंदोलन का एक माहौल निर्मित था। उपनिवेशों में इसने साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन का रूप लिया तो स्वतंत्रत देशों में पूँजीवाद विरोधी आंदोलन का। अत: गाँधीवादी आंदोलन को अंतराष्ट्रीय स्तर पर उभर रही इन नवीन वैचारिक शक्तियों से भी प्रोत्साहन मिला।

2. गाँधी की विचारधारा तथा कार्यक्रम:-

(i) **सत्याग्रह:** गाँधी ने सत्याग्रह के रूप में राजनीतिक प्रतिरोध की एक वैकल्पिक पद्धति विकसित कर ली। इस पद्धति में संबंधित व्यक्ति अथवा व्यवस्था के विरूद्ध आक्रोश अथवा घृणा का भाव नहीं होता वरन् सुधार के लिए एक मानवीय अपील होती है। अत: प्रतिपक्षी के लिए भी इस प्रकार के आंदोलन का उग्र दमन करना अत्यधिक कठिन हो जाता है।

(ii) **अहिंसा:** अहिंसा की अवधारणा को भारतीय संस्कृति में व्यापक स्वीकृति प्राप्त है। अत: यह अवधारणा भारतीय मानस के अनुकूल थी। दूसरे, अहिंसा की पद्धति जनआंदोलन के लिए अनुकूल थी। इसके माध्यम से गाँधीवादी आंदोलन में व्यापक भागीदारी संभव हुई। महिलाओं ने भी इसमें व्यापक भागीदारी निभायी। फिर अहिंसा की अवधारणा ने धनी वर्ग को भी यह आश्वासन दिया कि उनके विरूद्ध बल प्रयोग नहीं किया जाएगा। अत: गाँधीवादी आंदोलन में उनकी भी भागीदारी सुनिश्चित हुई। इसके अतिरिक्त अहिंसा की अवधारणा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से रक्षित ब्रिटिश साम्राज्य के साथ एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक समानता प्राप्त करने का प्रयास भी किया गया।

(iii) गाँधी के स्वराज की परिकल्पना भी अलग थी, जहाँ अधिकतर कांग्रेसी नेताओं के बीच स्वराज का अर्थ था राजनीतिक स्वतंत्रता वहीं गाँधी के लिए पहले यह नैतिक स्वतंत्रता थी फिर राजनीतिक स्वतंत्रता। इस प्रकार गाँधी की स्वराज विषयक संकल्पना अस्पष्ट थी, किंतु इसकी अस्पष्टता में ही इसका महत्व छिपा हुआ था क्योंकि विभिन्न वर्ग इसकी व्याख्या अपने ढ़ग से कर लेते थे।

(iv) गाँधी जी ने अपने हिंद स्वराज नामक ग्रंथ में पश्चिमी सभ्यता की खुलकर आलोचना की है उन्होंने यह घोषित किया है कि आधुनिक वकील, डॉक्टर तथा उद्योग ने भारत को कंगाल बना दिया। अगर एक दृष्टि से देखा जाए तो गाँधी के द्वारा पश्चिमी सभ्यता की आलोचना उन्हें आकर्षित कर रही थी जो पश्चिमीकरण की दौड़ में पीछे छूट गए थे।

(v) गाँधी ने वर्ग समन्वयवाद पर बल दिया। उनके न्यास के सिद्धांत (Trustiship Theory) को इस संदर्भ में देखा जा सकता है। गाँधी के वर्ग समन्यवाद की अवधारणा ने गाँधीवादी आंदोलन में विभिन्न वर्गो की भागीदारी को संभव बनाया।

2. कार्यक्रम :-

(i) अनेक कांग्रेसी नेताओं के विपरित, जिन्होने पश्चिमी वेशभूषा को महत्व दिया था, गाँधी जी ने साधारण लिवास धारण किया। वे जनसामान्य की तरह ट्रेन के तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे। यही वजह है कि जाति से बनिया और

THE STUDY

पेशे से वकील होने के बावजूद वे भारतीय किसानों के निकट पहुँच गए। उनकी बोलचाल भी किसानों को आकर्षित करती थी क्योंकि अपने भाषण में जहाँ-तहाँ वे रामायण की चौपाइयों को उद्धृत करते थे।

(ii) गाँधी ने रचनात्मक ग्रामीण कार्यक्रम के माध्यम से जिसमें चरखा, गाँव की सफाई, ग्राम पंचायत का गठन, छुआ-छूत विरोध आदि शामिल था, लगभग सात लाख भारतीय गाँवों को कांग्रेस की राजनीति से जोड़ दिया।

(iii) गाँधी ने भारतीय समाज के बहुलवादी चरित्र को समझा और फिर उसी के अनुकूल उन्होंने अपना राजनीतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अत: उनकी राजनीति वर्ग आधारित न होकर जन आधारित हो गई।

(iv) गाँधी का नजरिया व्यवहारिक था। अत: वे संघर्ष के साथ-साथ समझौता और वार्ता में भी विश्वास करते थे। यही वजह है कि चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति हों, किंतु अपने समर्थकों के लिए कुछ न कुछ रियायत प्राप्त कर ही लेते थे। अत: स्वाभाविक रूप में जनता गाँधीवादी नेतृत्व के प्रति आकर्षित होती।

4. **अफवाहों की भूमिका:-**

गाँधी जी की, प्रसिद्धि में अफवाहों ने भी भूमिका निभाई क्योंकि भारतीय जनता ने सदा गाँधी की छवि को बड़ा करके देखा तथा उन्हें एक ऐसे मुक्तिदाता के रूप में प्रस्तुत किया जो उन्हें शोषक समूह से मुक्ति दिला सकता था।

5. **भारतीय राजनीति में गाँधी का योगदान:-**

(i) गाँधी ने सत्याग्रह और अहिंसा की तकनीक के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में वैकल्पिक राजनीति की शुरूआत की।

(ii) गाँधी के आगमन के पूर्व कांग्रेस का सामाजिक आधार सीमित था। इसे महज कुछ खास वर्गों का समर्थन प्राप्त था किंतु गाँधी जी ने कांग्रेस को सामान्य जनता से जोड़ दिया। 1916 में बनारस में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर ही गाँधी जी ने कांग्रेस नेताओं को इस बात के लिए आगाह किया था कि कांग्रेस अब तक महज आभिजात्यों की पार्टी रही है। जब तक हम कांग्रेस को गांवो से नहीं जोड़ देते तब तक कांग्रेस भारत का एक प्रतिनिधि राजनीतिक दल नहीं बन सकती। व्यवहार में भी गाँधी जी ने इस बात पर अमल किया। वस्तुत: उनके आगमन से पूर्व कांग्रेस की राजनीति महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण, बंगाल के भद्रलोक तथा तमिल ब्राह्मण तक ही सीमित थी, किंतु गाँधी जी ने इसे **बिहार, संयुक्त प्रांत, गुजरात** आदि अन्य अपरंपरागत क्षेत्रों में फैलाया। साथ ही कांग्रेस की राजनीति से नये वर्गो को जोड़ा।

(iii) उन्होंने संगठन के रूप में भी कांग्रेस के स्वरूप में परिवर्तन लाया। उनके अंतर्गत ग्राम, ताल्लुक और जिला स्तर पर कांग्रेस की समितियों का पुनर्गठन किया गया। फिर कांग्रेस की कामकाज की भाषा के रूप में बोलचाल की भाषा का प्रयोग आरंभ हुआ। दूसरे शब्दों में, भाषायी आधार पर कांग्रेस की समितियों का पुनर्गठन हुआ।

(iv) गाँधी जी के अंतर्गत राष्ट्रीय आंदोलन तात्कालिक सामाजिक मुद्दों से भी जुड़ गया। अत: राष्ट्रनिर्माण एवं समाज सुधार दोनों प्रक्रियायें साथ-साथ चलती रहीं। उन्होंने राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहन दिया तथा छुआ-छूत के विरूद्ध एक बड़ा संघर्ष आरंभ किया।

(v) गाँधी जी के पश्चात् भी भारतीय राजनीति एवं विश्व राजनीति में गाँधीवाद की विरासत देखी जा सकती है। भारतीय राजनीति में यह विरासत भू-दान आंदोलन, चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन आदि के रूप में अभिव्यक्त हुआ। दूसरी तरफ विश्व राजनीति में **मार्टिन लूथर किंग के आंदोलन, दक्षिण अफ्रीका में अल्बर्ट लूथली की राजनीति** आदि पर गाँधीवाद की झलक देखी जा सकती है। गाँधी के आर्थिक एवं सामाजिक सिद्धांतों ने पर्यावरणवादियों को भी प्रेरित किया। **1999 में बीज सत्याग्रह गाँधीवाद** से प्रेरित था।

भारत में गाँधी का आगमन तथा गाँधीवादी राजनीति

1915 में गाँधी का दक्षिण अफ्रीका से भारत में आगमन

1893 में जब गाँधी दक्षिण अफ्रीका गये थे, तब से लेकर अब तक भारत की राजनीति में गुणात्मक परिवर्तन आ गया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सक्रियता बढ़ गई थी तथा इसकी शाखायें भारत में विभिन्न प्रांतो में खुल गयी थीं। गाँधी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरू माना। गोखले ने उन्हें यह सुझाव दिया कि भारत के विभिन्न मुद्दों पर किसी प्रकार का वक्तव्य देने से पूर्व वे पूरी भारत की यात्रा करें एवं भारतीय परिस्थितियों को समझे। अत: गाँधी ने 1915-16 में भारत के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया तथा भारतीय समाज को समझने का प्रयास किया।

THE STUDY

चम्पारन, अहमदाबाद और खेड़ा सत्याग्रह:-

आरंभ में गाँधी ने अपनी पहचान क्षेत्रीय आंदोलन के माध्यम से बनायी। 1917 में उन्होने बिहार के चम्पारन में तिनकठिया पद्वति के विरूद्ध एक सत्याग्रह आंदोलन छेड़ा। इसमें गाँधी को सफलता मिली तथा तिन कठिया का अंत हो गया। 1918 में अहमदाबाद में मील मालिकों के द्वारा प्लेग बोनस को समाप्त किये जाने के मुद्दे पर श्रमिकों ने आंदोलन छेड़ा। गाँधी जी द्वारा इसमें हस्तक्षेप किया गया। अंत में गाँधी की मध्यस्थता के कारण श्रमिकों को 35% बोनस प्राप्त हुआ। उसी प्रकार, 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में फसल नष्ट हो गई किंतु सरकार अकाल संहिता की अनुशंसा के आधार पर भू-राजस्व की राशि माफ करने के लिए तैयार नहीं थी। अंत में गाँधी जी ने हस्तक्षेप किया। इस आंदोलन के मध्य गाँधी को आंशिक सफलता मिली। सबसे बढ़कर इन आंदोलनों के मध्य गाँधी के अंतर्गत युवा नेताओं का एक वर्ग तैयार हो गया। इन्होंने भावी गाँधीवाद आंदोलन में भी अहम् भूमिका निभाई। दूसरे शब्दों में, बिहार आन्दोलन में गाँधी को **श्रीकृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, भूलाभाई देसाई, डा0 राजेंद्र प्रसाद** आदि का समर्थन मिला। उसी प्रकार गुजरात आंदोलन के मध्य गाँधी को बल्लभ भाई पटेल, इंदुलाल याज्ञनिक, शंकर बैकर आदि का सहयोग मिला।

रौलेट सत्याग्रह:-

1919 में गाँधी ने रौलेट एक्ट के मुद्दे पर एक अखिल भारतीय आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया। रौलेट अधिनियम एक काला कानून था, जिसके तहत किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता था। इसका नारा था 'कोई वकील नहीं, कोई दलील नहीं, कोई अपील नहीं'। प्रथम विश्व युद्ध के मध्य गाँधी ने ब्रिटिश सरकार का साथ दिया था तथा लोगों से यह अपील की थी कि वे ब्रिटिश के युद्ध प्रयास में सहयोग करें। उन्हें उम्मीद थी कि युद्ध के पश्चात् भारत को स्वशासन मिलेगा किंतु भारत को मिला रौलेट अधिनियम।

गाँधी ने इस अधिनियम के विरूद्ध एक अखिल भारतीय आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया। इसके लिए एक अखिल भारतीय सत्याग्रह समिति का गठन हुआ तथा **6 अप्रैल 1919 को रौलेट सत्याग्रह** आरंभ हुआ। चूंकि प्रथम विश्व युद्ध के मध्य सरकार के द्वारा पंजाब से जबरन भर्ती किये जाने की नीति के कारण पंजाब में पहले से ही असंतोष व्याप्त था। अत: पंजाब में यह आंदोलन उग्र एवं हिंसक हो गया और फिर **13 अप्रैल 1919 को जालियांवाला बाग हत्याकांड** हुआ। अत: गाँधी ने 19 अप्रैल 1919 को रौलेट सत्याग्रह आंदोलन को वापस ले लिया।

खिलाफत और असहयोग:-

गाँधी को 1920 में एक नया मुद्दा मिल गया और वह मुद्दा था कि खिलाफत का मुद्दा। वस्तुत 1910 के पश्चात् मुस्लिम लीग के स्वरूप तथा उसकी राजनीति में भी परिवर्तन आने लगा था। राष्ट्रवादी चेतना से ओत-प्रोत नये युवकों के प्रभाव में मुस्लिम लीग सर सैयद अहमद खान की राजपक्षधर नीति को छोड़ने लगी। इस काल में ऐसे कई मुद्दे थे, जो मुस्लिम लीग के युवा नेताओं को प्रभावित कर रहे थे। उदाहरण के लिए, यूरोप के ईसाई देशों के द्वारा 1912-13 के यूरोपीय युद्ध के मध्य तुर्की के विरूद्ध एक प्रकार का साजिश किया जाना, फिर **1912 में इटली के द्वारा तुर्की से त्रिपोली का क्षेत्र छीन लिया** जाना, उसी तरह मुस्लिम लीग के निरंतर मांग के बावजूद भी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी पर सरकार के द्वारा नियंत्रण कम करने पर राजी नहीं होना और अंत में तुर्की के खलीफा के, जो मुस्लिम विश्व का अध्यात्मिक प्रधान था, भविष्य का प्रश्न। गाँधी जी ने इस अवसर का लाभ उठाना चाहा तथा खिलाफत के मुद्दे को उठाकर उन्होने राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम एकता की नींव स्थापित करनी चाही। अत: उन्होंने मुस्लिम लीग के नये युवाओं से संपर्क बनाये रखा एवं उनके साथ सहयोग किया। अत: राष्ट्रवादियों के प्रभाव में मुस्लिम लीग ने **1920 में असहयोग का प्रस्ताव पारित** किया। तत्पश्चात् अब गाँधी कांग्रेस पर इस बात का दबाव डालने लगे की कांग्रेस भी पंजाब ज्यादती, खिलाफत ज्यादती तथा स्वराज के मुद्दे पर एक आखिल भारतीय आंदोलन छेड़ दे। किंतु कुछ कांग्रेसी नेता गाँधी के इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे थे। उदाहरण के लिए तिलक का यह मानना था कि मुस्लिम लीग के साथ जो भी समझौता हो सकता है वह महज लखनऊ पैक्ट के आधार पर होगा। चितरंजन दास, परिषद बहिष्कार के पक्ष में नहीं थे, जबकि मुहम्मद अली जिन्ना, स्वराज शब्द का और भी स्पष्टीकरण चाह रहे थे। किंतु गाँधी ने 1 अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन आंरभ किया। सितम्बर 1920 में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में (अध्यक्ष लाला लाजपत राय) इस प्रस्ताव को स्वीकृत मिली। फिर दिसंबर 1920 में नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन में (नियमित वार्षिक) इसे हरी झंडी मिल गयी। नागपुर अधिवेशन कांग्रेस के संगठनात्मक सुधार के लिए भी जाना जाता है। प्रवृत्ति के आधार पर हम असहयोग आंदोलन को कई चरणों में बाँट कर देख सकते हैं।

THE STUDY

1. **प्रथम चरण:** (जनवरी 1921–मार्च 1921) इस चरण में वकीलों के द्वारा न्यायालय का बहिष्कार हुआ, जबकि छात्रों के द्वारा शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार हुआ।

2. **द्वितीय चरण:** (अप्रैल 1921–जून 1921) इस काल में एक तिलक स्वराज फंड का गठन हुआ एवं चरखा को लोकप्रिय बनाया गया।

3. **तृतीय चरण:** (जुलाई 1921–नवम्बर 1921) इस चरण में असहयोग आंदोलन में उग्र रूझान देखा गया, जब अली बंधुओं के द्वारा मुस्लिमों को सेना से त्याग पत्र देने की अपील की गई तो सरकार के द्वारा उन्हें निर्वासित कर दिया गया। इस पर क्रुद्ध होकर मुस्लिम लीग के नेता हसरत मोहानी पूर्ण स्वराज की बात करने लगे इसके अतिरिक्त इस काल में क्षेत्रीय स्तर पर भी आंदोलन अभिव्यक्ति पाने लगे। **संयुक्त प्रांत में आंदोलन, पंजाब में आंदोलन, आंध्र के गुंटुर क्षेत्र में चिराला-पिराला आंदोलन, मालावार तट पर मोपला विद्रोह आदि।**

4. **चतुर्थ चरण:** (अक्टूबर 1921–फरवरी 1922) इस चरण में गाँधी जी ने गुजरात के बारदोली तहसील में एक सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया। उन्होंने लोगों को यह भी आश्वासन दिया था कि अगर आप धैर्य पूर्वक आगे बढ़ते रहे तो आपको एक वर्ष में स्वराज मिल जायेगा। किंतु तभी 5 फरवरी 1922 को चौरी–चौरा नामक स्थान पर एक बड़ी हिंसक घटना हुई। अत: उन्होने बारदोली प्रस्ताव के आधार पर **12 फरवरी 1922 को यह आंदोलन वापस** ले लिया

THE STUDY

नेहरू के अंतर्गत आर्थिक सुधार

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी भारतीय अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक विरासत से मुक्त करना। कृषि के क्षेत्र में सामंती संबंध कायम थे तथा भूमि का आसमान वितरण था। करारोपण व्यवस्था अन्यायपूर्ण थी तथा समाज के कमजोर तबके को सबसे अधिक कर देना पड़ता था। फिर भारत में आधारिक संरचना का विकास नहीं हुआ था। उद्योगों के मामले में भारत पिछड़ा हुआ था। अत: कृषि पर जनसंख्या का अधिभार अधिक था। स्वास्थ्य, शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भारत की स्थिति नीची थी। यहाँ जन्मदर तथा शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक था।

राष्ट्रीय आंदोलन के मध्य ही यह बात स्पष्ट की जा रही थी कि भारत की आर्थिक विकास के लिए भारत का औद्योगीकरण आवश्यक है। यह बात 1945 के औद्योगिक प्रस्ताव में भी दोहरायी गयी, किंतु औद्योगीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार आवश्यक था। स्वतंत्र भारत की सरकार ने मिश्रित अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को अपनाया था। जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र एवं नीजी क्षेत्र दोनों की भागीदारी थी। कृषि को नीजी क्षेत्र में रखा गया था, दूसरी तरफ सामरिक महत्व के उद्योग तथा पूंजीगत एवं भारी उद्यागों को सार्वजनिक क्षेत्र में, जबकि अन्य उद्यागों को नीजी क्षेत्र में।

सर्वप्रथम स्वतंत्र भारत की सरकार ने कृषि क्षेत्र में संस्थागत सुधार के लिए कदम उठाये। इसके तहत निम्नलिखित कदम उठाये गए–

1. **जमींदारी उन्मूलन–** 1949 में गोविंद बल्लभ पंत की समिति की अनुशंसा पर जमींदारी उन्मूलन कानून लाया जाना परंतु इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती। अत: 1951 में प्रथम संविधान संशोधन के तहत जमींदारी उन्मूलन कानून को 9वीं अनुसूची में रखा गया। 1954 में जमींदारी उन्मूलन कानून का क्रियान्वयन किंतु इसकी सबसे बड़ी सीमा यह रही कि जमींदारी के अंतर्गत अत्यधिक मात्रा में भूमि छोड़ दी गयी।

2. **रैयत सुधार कानून लक्ष्य–** (a) रैयतों को भूमि पर नियंत्रण देना (b) भू–राजस्व की राशि कुल उत्पादन के 1/4 से 1/6 करना किंतु इस क्षेत्र में भी सीमित सफलता ही मिली।

3. **भूमि हदबंदी–** 1959 में कांग्रेस ने अपनी एक बैठक में राज्य सरकारों को भूमि हदबंदी संबंधी कानून बनाने का निर्देश दिया। फिर 1960 में राज्य सरकारों के द्वारा इस दिशा में पहल की गई किंतु भूमि हदबंदी संबंधी कानून की निम्नलिखित सीमायें थीं–

(a) हदबंदी की सीमा परिवार पर निर्धारित न होकर व्यक्ति पर निर्धारित की गई।

(b) इसमें कई प्रकार की भूमि यानी बागवानी, कृषि को छूट दी गई।

(c) सबसे बढ़कर भूमि हदबंदी संबंधी कानून के क्रियान्वयन में अत्यधिक विलंब हुआ। अत: लोगों ने अपनी भूमि संबंधियों के नाम बेनामी हस्तांतरण कर दिए।

4. **भूमि चकबंदी–** ब्रिटिश शासन का एक दुष्प्रभाव था भूमि का विखंडन। इसके कारण उत्पादन में ह्रास हुआ था। अत: इस दोष को दूर करने के लिए भूमि चकबंदी आरंभ की गई किंतु चकबंदी का यह कार्यक्रम महज पंजाब, हरियाणा एवं प० उ० प्रदेश में सफल हुआ अन्य क्षेत्रों में नही।

भूमि सुधार की दिशा में प्रगति करने के पश्चात् सरकार ने औद्योगीकरण के लिए कदम उठाया। दूसरी पंचवर्षीय योजना भारत के औद्योगीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम था। इसमें आर्थिक विकास का जो मॉडल अपनाया गया उसे महलानोबिस मॉडल के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इस मॉडल को तैयार करने का श्रेय भारत के सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष पी० सी० महलानोबिस को है। यह मॉडल सोवियत रूस के फेल्डमैन मॉडल पर आधारित था। इसे दो क्षेत्र मॉडल के नाम से भी जाना जाता है।

जब हम विकास के नेहरूवादी मॉडल की बात करते हैं तो हमारा आशय महलानोबिस मॉडल से होता है। आर्थिक विकास के इस मॉडल का बल निम्नलिखित बातों पर रहा था। प्रथम, औद्योगीकरण का मुख्य बल पूंजीगत एवं भारी उद्योगों की स्थापना पर होनी चाहिए क्योंकि अगर भारी उद्योगों की स्थापना होती है तो फिर भविष्य में दूसरी पीढ़ी के उद्योग अर्थात् उपभोक्ता संबंधी उद्योग स्वमेव अस्तित्व में आ जायेंगे। इस प्रकार फेल्डमैन मॉडल की तरह इसका नारा था 'मशीन का उत्पादन मशीन के लिए (Machine for Machine sake)। लक्ष्य को पूरा करने के लिए बड़ी मात्रा में निवेश की जरूरत थी। अत: इसका बल अत्यधिक बचत पर रहा। बचत को प्रोत्साहन देने के लिए मांग में कटौती

THE STUDY

आवश्यक थी। फिर देशी उद्योगों को संरक्षण दिये जाने की जरूरत थी तथा उसके लिए आयात-प्रतिस्थापन आवश्यक था। चूंकि पूंजीगत उद्योग पूंजी पर आधारित होता है। इससे रोजगार संवर्द्धन सीमित रहता है। अत: रोजगार संवर्धन के लिए लघु एवं कुटीर उद्योग की स्थापना। इसके अतिरिक्त समाजवादी लक्ष्य को पूरा करने के लिए अर्थव्यवस्था में नीजी उद्यम का निरीक्षण आवश्यक है इसलिए 1951 में **औद्योगिक लाइसेंसिग नीति** की शुरूआत हुई।

योगदान-

1. भारत में आधारिक संरचना (Intrestructure) का विकास हुआ तथा मूलभूत उद्योगों की स्थापना हुई। आरंभिक तीन योजनाओं में उद्योगों में वृद्धि दर लगभग 7.1% रही।
2. बचत की दर में भी व्यापक वृद्धि हुई। यह लगभग 7% से 22% से 24% तक हो गयी।
3. महत्वपूर्ण शोध संस्थानों का विकास हुआ तथा कृषि के क्षेत्र में भी वृद्धि लगभग 3% रही।
4. सामाजिक क्षेत्र में भी विकास हुआ अर्थात् शिक्षा, स्वाथ्य आदि क्षेत्र में प्रगति हुई।

सीमायें:-

1. भूमि के पुनर्वितरण के मोर्चे पर सरकार की विफलता के कारण बाजार का विस्तार नहीं हो सका और फिर अंततोगत्वा औद्योगीकरण भी पिछड़ गया।
2. सार्वजनिक उद्योगों का संचालन व्यावसायिक शर्तों पर नहीं हो सका।
3. कोटा परमिट राज के कारण भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलना।

प्रश्न : आचार्य विनोबा भावे के भूदान व ग्रामदान आंदोलनों के उद्देश्य का समालोचनात्मक विवेचना कीजिए और उनकी सफलता का आकलन कीजिए।

उत्तर: भूदान एवं ग्रामदान आंदोलन वर्ग-समन्वय पर आधारित भूमि सुधार का एक कार्यक्रम था। इसके अपने सबल एवं निर्बल पक्ष थे। विनोवा भावे ने अहिंसक सामाजिक रूपान्तरण के लिए सर्वोदय समाज का गठन किया। बड़े-बड़े भूस्वामी इस बात के लिए राजी किए गए कि वे कम से कम अपनी भूमि का छठा हिस्सा अनुदान के रूप में दे दें। यह आंदोलन **1951 में तेलांगना के पोचमपल्ली गांव से आरंभ हुआ।** 1955 में इसने एक नये आंदोलन का रूप ले लिया। इसे ग्रामदान के नाम से जाना गया। भूदान एवं ग्रामदान के पीछे आदर्श यह था कि सभी भूमि ईश्वर की है तथा इसे खुले रूप में अनुदान दिया जाना चाहिए।

अगर हम भूदान एवं ग्रामदान के उद्देश्य पर विचार करते हैं तो हमें इसके पीछे घोषित एवं अघोषित दो प्रकार के उद्देश्य दृष्टिगत होते हैं। इसका घोषित उद्देश्य था शांति पूर्ण तरीके से आर्थिक पुनर्वितरण। अगर यह मॉडल सफल हो जाता तो यह आर्थिक पुनर्वितरण का एक नवीन मॉडल स्थापित कर सकता था। वहीं इसका अघोषित उद्देश्य था आर्थिक रूप में विभाजित समाज में वर्ग संघर्ष को रोकना। यह भी गौर करने की बात है कि यह आंदोलन तेलांगना से आरंभ हुआ जहां साम्यवादी दल उग्र आंदोलन छेड़ चुका था। इसके अतिरिक्त इस संबंध में एक मान्यता यह भी है कि इस आंदोलन ने भूदान के माध्यम से ग्रामीण भूमिहीनों के बीच थोड़ी-सी भूमि वितरित कर ग्रामीण क्षेत्र से उनके पलायन को रोकने का प्रयास कर रहा था ताकि भूमिधारी वर्ग को पर्याप्त मात्रा में कृषि श्रम उपलब्ध रहे।

अब जहाँ तक इसकी सफलता के आकलन का प्रश्न है तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए भूदान आंदोलन कुल मिलाकर सफल नहीं रहा। उड़ीसा में अपेक्षाकृत यह अधिक प्रभावी रहा था किंतु अन्य क्षेत्रों में यह प्रभावहीन रह गया। जो 4 मिलियन एकड़ भूमि अनुदान में दी गई थी वह या तो खेती के लायक नहीं थी या विवादास्पद थी। इस आंदोलन की विफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि भूमि-सुधार के लिए दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत थी।

प्रश्न : 'जय जवान जय किसान' नारे के उद्भव और महत्ता पर एक समालोचनात्मक लेख लिखिए।

उत्तर: भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के द्वारा 1965 में दिया गया नारा 'जय जवान जय किसान' सैन्य सुरक्षा एवं खाद्य सुरक्षा के बीच आंतरिक संबंधों को रेखांकित करता है। साथ ही इस नारे से यह भी संकेत मिलत है कि स्वतंत्र विदेश नीति के संचालन के लिए सैन्य शक्ति एवं खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता दोनों आवश्यक है।

उपर्युक्त घोषणा ने भारत में हरित क्रांति का आधार तैयार किया। 1960 के दशक में भारत पीएल 480 के तहत अमेरिकी खाद्यान्न सहायता पर निर्भर था किंतु युद्ध के मध्य तथा उसके पश्चात् जिस प्रकार लिंडन जॉन्सन की सरकार ने भारत की विदेश नीति पर दबाव बनाना चाहा उससे भारत सरकार को एक सबक मिला। वह सबक यह था कि स्वतंत्र विदेश नीति के संचालन के लिए खाद्य सुरक्षा आवश्यक है। अत: पहले लाल बहादुर शास्त्री तथा फिर उनके उत्तराधिकारी ने हरित क्रांति का नारा देकर भारत की खाद्यान्न आपूर्ति को सुरक्षित करने का प्रयास किया। 1966 तथा 1973 के बीच

THE STUDY

इसका प्रसार पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में देखा गया। इस क्रांति को लाने में हाइब्रिड बीज, रासायनिक उर्वरक, उन्नत सिंचाई, कीटनाशक तथा उन्नत कृषि तकनीकी यथा, ट्रैक्टर आदि का बड़ा योगदान रहा।

हरित क्रांति के कई लाभ भारत को मिले। भारत खाद्यान्न के मामले में आत्म-निर्भर हो गया क्योंकि खाद्यान्न का उत्पादन **50 मिलियन टन से बढ़कर 180 मिलियन टन** हो गया। फिर भारत में रासायनिक खाद्य कीटनाशक तथा कृषि उपकरणों का उत्पादन करने वाले नये उद्योग स्थापित हुए। भारतीय किसानों की क्रयशक्ति में भी वृद्धि हुई। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। परंतु हरित क्रांति की अपनी सीमाएँ भी रहीं। किसानों के सभी वर्गों तथा सभी क्षेत्रों को इसका समान लाभ नहीं मिला। इसलिए जहाँ हरित क्रांति विफल हो गई वहाँ लाल क्रांति की शुरूआत हुई। फिर कीटनाशक तथा रासायनिक खादों ने पर्यावरण पर भी अपना दुष्प्रभाव छोड़ा।

THE STUDY

THE STUDY

(An Institute for IAS)

Divyam Educom Pvt. Ltd.

Our Destiny in Our Hands

HISTORY

By Manikant Singh

THE STUDY under the expert guidance of MANIKANT SINGH has continued its journey on the path of success.....

अभ्यर्थियो! मुख्य परीक्षा में वैकल्पिक विषयों (Optional Subjects) में प्रश्नों की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि आपकी सफलता में भविष्य में वैकल्पिक विषय की निर्णायक भूमिका होगी। वैकल्पिक विषयों में अत्यधिक स्तरीय प्रश्न पूछे जाने लगे हैं। अतः वैकल्पिक विषय के लिए दीर्घकालीन तैयारी की जरूरत है। इसलिए अब आवश्यक है कि प्रारम्भिक परीक्षा से पूर्व वैकल्पिक विषय की तैयारी का अधिकांश भाग पूरा हो चुका हो क्योंकि प्रारम्भिक परीक्षा के बाद यह संभव नहीं हो सकेगा।

बदले हुए परिदृश्य में इतिहास एक अति महत्वपूर्ण वैकल्पिक विषय के रूप में उभरा है। इसके निम्नलिखित कारण हैं। प्रथम, इसका सामान्य अध्ययन में बहुत बड़ा योगदान (मुख्य परीक्षा प्रथम पत्र में 100 से 110 अंक तथा प्रारंभिक परीक्षा में 32 से 34 अंक) है। दूसरे, यह विषय सरल एवं सुग्राह्य है। अन्त में, इसमें "THE STUDY" जैसे विश्वसनीय संस्थान का सहयोग प्राप्त है।

हमारी रणनीति किस प्रकार अन्य से अलग है?

प्रचलित रणनीति

1. इतिहास के अध्ययन का अर्थ लगाया जाता है अधिक-से-अधिक सूचनाओं एवं तथ्यों का संग्रह करना।
2. अध्यापन में टॉपिक की क्रमबद्धता का प्रायः निर्वाह नहीं किया जाता (गुप्तकाल के अध्यापन के पश्चात् मौर्यकाल का अध्यापन, प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् जर्मनी के एकीकरण का अध्यापन आदि इस क्रमबद्धता का उल्लंघन है।)
3. अभ्यर्थियों को इतिहास के अध्ययन में प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोणों (इतिहास लेखन) से अवगत नहीं कराया जाता। अतः किसी जटिल प्रश्न पर अपना झुकाव (Stand) स्पष्ट करना उनके लिए संभव नहीं हो पाता।
4. समय की बचत को ध्यान में रखकर कक्षा में भी तथ्यों को प्वाईंट्स में प्रदर्शित किया जाता किंतु इस कारण से अभ्यर्थियों की टॉपिक पर पूर्ण समझ विकसित नहीं हो पाता।
5. लेखन कला का विकास नहीं हो पाता।

हमारी रणनीति

1. हमारे लिए इतिहास तथ्य (Fact) कम एवं विश्लेषण (Analysis) अधिक है।
2. हम तीन चरणों (Stages) में विषय की तैयारी को पूर्ण करते हैं। प्रथम चरण में हमारा बल विषय में छात्रों की दिलचस्पी एवं मौलिक समझ विकसित करने पर होता। इसलिए हम उन्हें निरन्तरता एवं परिवर्तन (Continuity and Changes) का ज्ञान देते।
3. द्वितीय चरण में हमारा बल इतिहास लेखन के ज्ञान (Knowledge of Historiography) पर होता है ताकि अभ्यर्थी स्तरीय प्रश्नों (Standard Questions) पर अपना झुकाव स्पष्ट कर सकें।
4. तीसरे चरण में लेखन शैली का विकास किया जाता है। इसके लिए हम अभ्यर्थियों को Thesis-based Writing का प्रशिक्षण देते हैं।

The most trusted name in History brings you

ONLINE CLASSES

(Hindi/English Medium)

By Manikant Singh

Features:-
- **Online classes**
- **Study Material &Latest updates**
- **Answer writing practice and Tests**
- **Test Series**

For videos visit
www.thestudyias.net

Correspondence Course

(Hindi/English Med.)

-Complete Study Material
-Personal guidance
-Answer writing practice and Tests

210, Virat Bhawan, IInd Floor, Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9
www.thestudyias.net :: Email: thestudyias@gmail.com /thestudyias
Ph. : 011-27653672, 42870015, 9999278966, 9999516388